छाबिन आलुन

(कारबि रामायण)

अध्याय एक

केचेंग

हाचें पिरथे थावि-ई। इलि कारबि आलांरि।।
छाबिन पु नांप्लां माति। छाबिन आलुन पु नांफि।।
हाकौ कांदुक पुरथिमि। इनुम कारबि आलंकरि।।
आवे लुन-कान आतिरि। छि एथाक छुमछावाड किरि।।
छामफ़ृ ज'पारनि जादि। लाहिन कारबि आलंरि।।
द'नांजि ल'तुन आतिरि। ईरू छुमछावाड किरि।।
चारनाम जुरा नांपिनथि। अ'जा रांचेना लंकि।।
लाहिन कारबि आलंरि। ल'तुन आवे आतिरि।।
राइने तां च'जाक अंति। छिर्ईम रांछेना लंकि।।
ल'नन कारबि आलंरि। पन नन ल'तुन आछुमबि।।
छेना चारनाम दनदुनरि। छेना नांल' पुरथिमि।।
पारजानके मिरजेंग मुतिति। नांद' तेलेहर लंबि।।
छनछे करमान्दु मेपि। लिमएत् कत आतार बिति।।
छि वां ल'तुन ब'चेरि। चिफं फं-लरिं आबि।।
आपर छिंक्रें वांर'छि। मनित आतुम छ'कारबि।।
छकपाम आमेइ नांपांनि। नांल' मिरजें मुतिति।।
नांजु मनित छ'कारबि। अ'जा मिरजें मुतिति।।
नांतुम क'नातछि ल'जि?
थाकदुं मिरजें मुतिति। छकपाम आमेइ लांदुर्नाज।।
थारे चेदु पेन लंबि। लिमपि तार मेछ' जिलि।।
मिरजें जुदुन आलामदि। चामथा तार मेछ' जिलि।।
जानथा लां पेन तुलेहि। थारे चेदु पेन लंबि।।
तारछ' नांचाम नांइथि। तारछ' लिमरा पांदुकनि।।
चंमि मिरजें मुतिनि। चारनाम नांजु पांदुकनि।।

छाबिन आलुन

(कारबि रामायण)

कारबि समाज में संगीत का प्रचार

प्राचीन काल में कारबि समाज में संगीत का प्रचार नहीं था। उसके लिए स्वयं सृष्टिकर्ता हेमफु (ब्रह्मा) चिंतित हो गये। इस उद्देश्य से हेमफु ने संगीतज्ञ रांचेना (गंधर्व) को अपने पास बुलाकर कहा—हे महान रांचेना! मुझे बहुत दुःख है कि आज तक कारबि समाज में संगीत की चर्चा नहीं हुई। अब तुम पृथ्वी पर जाओ और कारबि समाज में संगीत की नींव डालो।

सृष्टिकर्त्ता हेमफु के आदेशानुसार रांचेना मिरजेंग भाइयों के रूप में मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आये और तेलहर नामक झरने के तट पर झोपड़ी बनाई और दोनों संगीत की साधना (चर्चा) में तत्पर हो गये। कुछ ही दिनों में मिरजेंगे भाइयों का यश चारों ओर फैल गया। दिन बीतने लगे। ऋतु चक्र घूमकर ले आया शिशिर की शुष्कता। लोरि आबि नामक गाँव में छ-कारबियों ने फसल काटने का उत्सव (त्योहार) मनाने की ठानी।

मिरजेंग भ्राताद्वय वहाँ चल पड़े। उन लोगों को देखकर कारबि जनता ने पूछा—'हे मिरजेंग भ्राताओं! आपलोग कहाँ जा रहे हैं? भ्राताओं ने उत्तर दिया— फसल काटने का उत्सव देखने आया हूँ। दोनों का हर्षोल्लास से स्वागत किया गया और चेदु और लंबि नामक दो युवकों ने मिरंजे भ्राताओं की सेवा का भार अपने ऊपर ले लिया।

पाटिदे[१] चटाई को तुलसी मिश्रित जल से अच्छी तरह शुद्ध कर बैठने का आग्रह किया। मिरजेंग भ्राता अत्यन्त संतुष्ट होकर सहर्ष वहाँ बैठ गये।

१-एक प्रकार का पौधा है, जिसकी सींकों से चटाई बनायी जाती है, जो असम में "शीतल पाटी" नाम से प्रख्यात है।

जानथा जरमाइ बंमेरि। थाइनन् जरलां बंइछि।।
नेतुम मिरजें मुतिति। ल'तुन आमेन जांथानजि।।
छि मनित आतुम छ'कारबि। चारनाम आरजु चिदेनरि।।
ताछि मिरजें मुतिति। दुजिर' बंमेछ' मेरि।।
बंमे परम पातामरि। बंमेछ' दुजिर दंक्रि।।
बां नां ए' लतुन आतिरि। चिफं कारबि आलंरि।।
ल'तुन आमेत नांछाबि। मिरजें आतुम मुतिति।।
ल'तुन थानकां छनछुरि। मिरजें आतुम मुतिति।।
चेजान जरलां बंमेरि। हरण दुंजिर पांदुकनि।।
नांजु मिरजें मुतिति। म' पिरथे लंले इंतांरि।।
चिफं कारबि आलांरि। द'प' लुन-कान आतिरि।।
ल'तुन नां देंनन लंबि। नांतुम चेदु पेन लंबि।।
चिफं कारबि आलंरि। रिकनन ल'तन आछुमबि।।
ता नांछें चिबिदेइ लंबि। म' पिरथे लंले ईतांरि।।
ता लुंचे आमान देंनांजि। नांतुम मनित छ'कारबि।।
निम-रकम केच' आरनि। ता लुंचे आमान द'नांजि।।
पु चारनाम जुकां आफि। रानाम मिरजें मुतिति।।
पुथत चेल' छिनिंछि। मिरजें आदाहाइ बेनछि।।
नंपु कांतां पुरथिमि। ता लुंचे आमान बिवेर ग'लि।।

अध्याय -दो

कारबि आंबं छाबिन आलुन

थारे चेदु पेन लंबि। नांप्लां लुंचेप' लंकि।।
ईरू लुन्चेप' लंबि। चिफं कारबि आलंरि।।
राई फुरि लि हि हि। रिक पन ल'तुन आछुमबि।।
नांले काछेन आलंरि। काछेन लुमार प्लांर'छि।।
मेअं काछेन आरिन्दि। काछेन किम फारला-हेमपि।।
रिन्दि हंफारला मेपि। बिति कत् आतार लिमक्रि।।
मेकार केद' बांछुरि। छार छार बां आंमुम लक्रि।।
छार छार चंमि आछारि। ईरू लुन्चेप' लंबि।।
काछेन आफान नांहुमरि। नांल काछेन आरिन्दि।।
काछेन नांजु आलामदि। अ'जा लुन्चेप' लंबि।।
राई क'नातछि लंजि। ने लंले नांफानछि हुमरि।।
रानाम पेन ने लं आछाखि। लुनचे ने ल'तुन आतिरि।।

फिर उन्होंने चेदु और लंबि से कहा-'बेटे हमारे लिए एक 'हरबंग' लाओ। आज हम तुमलोगों को कुछ गीत सुनायेंगे।'' आदेश का पालन तत्काल हुआ। मिरजेंग भ्राताओं ने हरबंग हाथ में लेकर पहले तंत्र-मंत्र का गायन किया; और फिर चेदु और लंबि को एक हजार गीत सुनाया। अंत में चेदु और लंबि को आशीर्वाद देकर कहा- ''बेटे, हमने तुमलोगों को संगीत की शिक्षा प्रदान कर दी। आज से तुम लोग कारबि समाज में संगीत का प्रचार जोरों से करो। कारबि लोगों को संगीत सुनाओ और संगीत की शिक्षा प्रदान करो; पर याद रखना, संगीत परिवेशन करने के पहले हमेशा लुंचे (संगीत) की अग्रपूजा करना नहीं भूलोगे।'' फिर आशीर्वाद देकर मिरजेंग भ्राताद्वय वहाँ से प्रस्थान कर स्वर्ग चले गये।

अध्याय-दो

कारबि समाज में छाबिन आलुन

मिरजेंग भ्रातारूप रांचेना के आशीर्वाद से चेदु और लंबि कारबि समाज में लुंचेप[1] (संगीतज्ञ) के रूप में प्रख्यात हो गये और गुरु की आज्ञानुसार संगीत का प्रचार तथा प्रसार करने के लिए कारबि प्रांतों (गाँव-गाँव) में घूमने लगे। वे घूमते-घूमते काछेन[2] के राज्य में उपस्थित हुए। काछेन धन-सम्पदा से समृद्ध एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनका घर-बार बहुत सुन्दर था। उनके बैठकखाने में प्रतिदिन प्रजाजन तथा अनेक वयोवृद्ध ज्ञानी लोगों का समागम होता रहता था। लुंचेप (संगीतज्ञ) चेदु और लंबि काछेन के घर पहुँचे। काछेन ने दोनों का अत्यन्त सम्मान सहित स्वागत किया और वहाँ पधारने का कारण पूछा। तब लुंचेपद्वय ने आने का उद्देश्य बताया। उन लोगों की बात सुनकर काछेन ने आनन्दविभोर होकर उपस्थित प्रजाजन और सभासदों को संबोधित कर कहा- 'हे प्रजावर्ग और

१-एक प्रकार का लोक वाद्य २ संगीत प्रेमी कारबि जमींदार

आछुमबि। ल'तुन छुमबि बिक नांजि।।
नेद' ल'तुन क्रेहिनि। ल'जि निहां पेन निचि।।
त'जि लंरि आलामदि। अ'जा चाकर पेन चाक्रि।।
काछेन नांजु इलि। पिनि इरुन इरिन्दि।।
कपाइ ता मेअं लंबि। ल'तुन छार' दुन नांति।।
नांल' बां लुनचेप' चाक्रि। दनदुन बां छार आंमुं लकरि।।
दनदुन चाकर पेन आलामदि। अ'जा काछेन छार लंकि।।
लुन्चे नांजु लि। जान नन कवे पेन बिथि।।
जान नन् जर लां पेन जर नांथानजि। छाबिन आलुन कमकालि।।
छाबिन आलुन अ'जि। नांवेकजि ज'क्रेहिनि।।
आज'-आरनि दिं निक्रेहिनि। नांजि जर्लां पेन जर्लि।।
नांवेकजि बिथि। नांजि व'छार-व'ल'कि।।
नांजि क'वे पेन नांजि। छाबिन इंदें क्रेहिनि।।
व'लकि केलक आफि। देकक् लुनचे आहि-ई।।
छाबिन आलुन जुत लंकि। आपेन आचाकर चाक्रि।।
ईरू काछेन छार नांचेदनरि। दनरि छार आंमुम लकरि।।
चारनाम बां जर्लि। वानपि बंमेछ' हिनि।।
वानपि बंमेछ' पेन आकेंरि। छरन रिजाक पांदुक्नि।।
छरन लुनचे तेबेरि। लुन्चे नांजु आलामदि।।
लुन्चे चंमि निमारलि। लापेन केथो पेन किरि।।
अ'जा करते आरनि। छाबिन आलुन नांथानजि।।
छार' नन पिमि मेपि। दुंजिर् जिर् बाताइ हिनि।।
चैजान बंमेइछ' आरवि। रानाम फार' चरनछि।।
दुंजिर आर ए पेन पांचेंरि।।
छाबिन आलुन

अध्याय-तीन

राम-लखन आमाहां काथेक आफ्रां

हाकौ आहुत पुरथिमि। एथाक छंछारप'-लंबि।।
ईरू बां थिप-थे आतिरि। नांथिप छुमछि पेन हिईं।।
एथाक छंछारप'लंकि। लाछि राइकम आतिरि।।
रामथि इ फारलेपन्फारलि। काइके नांतां पुरथिमि।।
एथाक छंछारप'लंकि। छंछार आछें काजादि।।
छरजन ने चक्चेदेत आवि। हाकिर तालौ नांलमपि।।
लंकात रावण आलंरि। ईनाम रावण पापुति।।

सभासदो, युवक-युवतियों और बालक-बालिकाओं! मेरे बैठकखाने के सामने सब एकत्रित हो जाओ। हमारे यहाँ लुंचेप (संगीतज्ञ) आये हैं, उन लोगों से हम संगीत के माध्यम से छाबिन आलुन (रामकथा) रूपी रस का आस्वादन करेंगे।

लुंचेप ने काछेन से कहा– 'हे सम्मानीय, हमारे लिए हरबंग और ताम्बूल-पान मंगवाइए। आज आपलोगों को छाबिन का गीत सुनायेंगे। 'छाबिन आलुन' सुनाने में काफी समय लग जायगा– कम से कम बारह दिन और बारह रात तो लगेगा ही। इसके लिए मद्य, ताम्बूल और एक मुर्गे की आवश्यकता होगी। छाबिन आलुन सुनाने के पश्चात् हेमफु * की पूजा करनी होगी। मुर्गा अर्पित कर हम उनसे अपने अपराधों के लिए क्षमा याचना करेंगे। क्योंकि छाबिन आलुन की सृष्टि स्वयं हेमफु ने की है।

काछेन और उनके प्रजावर्ग ने शीघ्र ही समस्त सामग्री एकत्रित कर लुंचेप के पास रख दी। उसके बाद, सब काछेन के बैठकखाने के सामने के आँगन में चुपचाप बैठ गये और संगीत सुनने के लिए तैयार हो गये। लुंचेप चेदु और लंबि हरबंग लेकर पहले तंत्र-मंत्र का गायन किया और उपस्थित श्रोताओं को संबोधित कर कहा–'हे भाइयों और बहनों, हम आपलोगों के सामने 'छाबिन आलुन' का गायन करेंगे। आपलोग मन लगाकर सुनें।''

इस प्रकार लोक-संगीत के माध्यम से कारबि समाज में 'छाबिन आलुन' के रूप में राम कथा का प्रचार हुआ।

अध्याय-तीन

राम-लखन (लक्ष्मण)के जन्म का पूर्वाभास

सृष्टिकर्त्ता (हेमफु) ने सारे जगत का सृजन किया। पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ, विभिन्न प्रकार के जलचर प्राणियाँ, कीट-पतंग, सरीसृप, मनुष्य, देवता, राक्षस आदि की भी सृष्टि की। वे स्वर्ग से सभी प्राणियों के कार्यों का निरीक्षण करने लगे। सृष्टिकर्ता ने देखा कि सृष्टि करते समय कुछ

* सृष्टिकर्ता

कांतां कांछाक कमकालि। इंनाम रावण के हिई।।
लंकु लंदां काफुरि। छिनिं पिरथे फेरेरि।।
पिरथे मारात क्रिहिनि। रानाम द'आन बांछुरि।।
काइके नांजु काछेंरि। जु छेंरि आंदि आंदि।।
पिरथे धारम आलंरि। धारम पु पारें उनजि।।
ईनाम रावण पापुति। रावण व'लेंबम आरनि।।
पिरथे धारम विरदेतजि। एथाक छंछारप' किरि।।
जादि आछें देरदु इ। रावण आफान कापिथी।।
पुआन के जइजि कालि। रावण इनुत आबिदि।।
फ'दुनदे रानाम छुरि। रावण केद' आफु क्रेहिनि।।
ईरू छांछारप' किरि। पुथत आछें चिजादि।।
रावण इनुत नात कालि। करते बांके थम बांफिल।।
इनुत बिबिरवन लंकि। कुंभता थेदु आछारति।।
इनुत के रावण मही। आछ' मेकनाद कमकालि।।
बांरानाम छुरि फेरेरि। रानाम पेनले रण चिपि।।
काइता हाइवेर बर लंकि। ईरू छुमछावाइ किरि।।
पुथत आछें काजादि। ने छरजन आपुरथिमि।।
ने धारम आफानाछि छरजि। पाप-पुन आफानके कालि।।
पाप-पुन आतु विर नांकि। इंनाम रावण पापुति।।
पिनछं नाहक अबिदि। रावण प्राणमुइ दाम नांजि।।
दाकि आंबं पुरथिमि। धारम आफान केराइजि।।
नकबे प' छरजन नांजि। पु इरू आछें काजादि।।

अध्याय-चार

राम-लखन आमाहां केथेक

हाकिर ओरइ रंछ'पि। केछम दहरम लंकि।।
छत-बत दहरम पेनछि। चाक्रि-चाकर काचारि ता।।
छेंवे के अइ ज'पारनि।।
हेमफी बांकेथेम थमपि। छेरजां आवे आछेरलि।।
हेमफी पेन दहरम लंकि। काइके नांजु काछेंरि।।
केथे दहरम लंकि। कां तां-कांछाक कमकालि।।
चेजान छेरलि थाइ इछि। छामफ्रि आरनि नि।।
अकहु च'ल' ज' परानि। केथे दहरम लंकि।।
लेंफित छंछार आकेंरि। ईरु छंछारप' किरि।।

गलतियाँ हो गई। पृथ्वीपर लंका नामक राज्य में रावण अत्यन्त शक्तिशाली तथा अत्याचारी बन बैठा है। रावण अकेले भी नहीं था। उसके आत्मीय-स्वजन भी अत्यन्त पराक्रमी और अत्याचारी थे। उनमें भी कूंभ (कूंभकर्ण) मूहीरावण (महीरावण) और मेक्नाद (मेघनाद) अत्यन्त बलशाली तथा अत्याचारी थे। उनके अत्याचार तथा काले करतूतों से धर्म का नाश होने की आशंका हो गई। उस समय रावण की शक्ति चरम सीमा पर थी। वह अत्यन्त बुद्धिमान था तथा उसके दश हाथ और बारह शिर थे। सृष्टिकर्ता ने सोचा कि जिस किसी प्रकार से हो, रावण सहित सभी दुष्टों को मारकर धर्म की रक्षा करनी ही होगी। इसके लिए रावण से भी वीर तथा शक्तिशाली पुरुषों की सृष्टि करने की योजना बनाई और उसके लिए तत्पर हो गए।

अध्याय-चार

राम-लक्ष्मण का जन्म

समुद्र के किनारे एक राज्य था। उस राज्य में दहरम (दशरथ) नामक राजा राज्य करते थे। वे सत्य और अहिंसा के माध्यम से अपनी प्रजा का पालन करते थे। किन्तु सब कुछ होते हुए भी उनका मन बहुत दुःखी था, क्योंकि उनकी कोई सन्तान नहीं थी।

दहरम एक वीर तथा शिकारप्रिय राजा थे। एक बार शिकार के लिए जंगल में प्रविष्ट हुए। वे शिकार करते-करते सृष्टिकर्त्ता हेमफु (ब्रह्मा) के पास पहुँच गये। हेमफु ने जब उनके आगमन का कारण पूछा तो दहरम ने कहा कि वह सन्तान की प्राप्ति का उपाय खोजने के लिए यहाँ आये हैं। दहरम की बात सुनकर हेमफु ने हँसते हुए कहा– 'हे धर्मराज, तुम चिन्ता मत करो, पुत्र प्राप्ति का वर प्राप्त हो जायेगा।" यह कह कर हेमफु मन ही मन सोचने लगा। समय बहुत जटिल है, धर्मराज के माध्यम से पृथ्वी पर दो वीर-पुत्रों की सृष्टि कर रावण को ध्वंस करना उचित होगा। यह सोचकर फिर हेमफु ने कहा–'हे धर्मराज, यह डंडा लेकर पूर्वदिशा की तरफ